Title: Need to discuss the issues pertaining to taxes raised by the former Member of Parliament Shri Vasant Sathe.

श्री चन्द्रशेखर (बलिया, उ.प्र.) : अध्यक्ष जी, मैं एक चिन्ताजनक स्थिति की ओर आपका ध्यान खींचना चाहता हूं।

२१वीं सदी हमारे लिए कहीं आर्थिक संकट की सदी न हो जाये, यह चिन्ता हमारे देश के अनेक वर्गों में है। लेकिन मैं उसकी ओर ध्यान इसलिए दिलाना चाहता हूं कि लोक सभा के बहुत दिनों तक सदस्य रहे, मंत्रिमंडल में कई पदों को उन्होंने सुशोभित किया, वसन्त साठे जी ने इस सवाल को बार-बार उठाया है। पिछले पांच वर्षों में उन्होंने इस पर कई बार टिप्पणी भी की है। उनका कहना है कि भारत जैसे देश में, जहां कहा जाता है कि ३० करोड़ लोग मध्यम वर्ग के हैं, वहां केवल एक फीसदी लोग टैक्स देते हैं और नतीजा यह होता है कि सरकारी खजाने में टैक्स कम आता है और हम विदेशी मुद्रा पर, कर्ज के ऊपर निर्भर हैं। कर्ज दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। आज आंकड़ा यह है कि ४० फीसदी उस पर सूद में और उस पर खर्च करने में लग जाता है, इसलिए विदेशी मुद्रा पर निर्भर रहना इस देश के सम्मान के खिलाफ, आत्मनिर्भरता के खिलाफ, हमारे पुरुषार्थ के खिलाफ एक बड़ी चिन्ता है। श्री वसन्त साठे ने, जब माननीय नरसिंह राव जी प्रधान मंत्री थे,

एक पुस्तक ठटैक्स विदाउट फियर'' लिखी थी। उसको मनमोहन सिंह जी ने नरसिंह राव जी को दिया था। उसमें उन्होंने कुछ सुझाव दिए थे। वे लगातार लिखते रहे हैं, लोगों से चर्चा करते रहे हैं। आर्थिक विषय के जानकार लोगों से उन्होंने बातचीत की, बीच-बीच में कई बार उन्होंने मुझ से भी बात की। उन्होंने कुछ सुझाव दिए हैं, मैं उनमें नहीं जाना चाहता, कि अगर दस फीसदी लोग भी टैक्स देने लगें तो हमारी सरकार की आमदनी टैक्स से ही पांच-छः गुना बढ़ जाएगी। उन्होंने कुछ सुझाव दिये हैं, उन पर वे चर्चा चाहते हैं। जब किसी ने चर्चा नहीं की तो उदास होकर, दुखी होकर उन्होंने कठोर निर्णय लिया है। वसंत साठे जी भारत की राजनीति को जानते हैं, अर्थ नीति को जानते हैं। स्वाधीनता आंदोलन के दिनों से लेकर कांग्रेस पार्टी के अंदर मैंने उनको निकट से देखा है। हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं के वे जानकार हैं। उन्होंने दुखी होकर यह निर्णय लिया है कि अगर इस पर चर्चा नहीं हुई, विचार भी नहीं हुआ, तो ४ मार्च, २००० से वे आमरण अनशन करेंगे। ऐसी स्थिति न पैदा हो, उसके लिए के वल यह मांग है कि सरकार के लोग और सरकार के अलावा दूसरे उनकी पार्टी के लोग भी इस विषय में कम से कम बातचीत करें। उस पर उन्होंने कई लोगों के विचार लिए हैं, उसका स्वागत भी किया गया है। मैं आपके जरिए सरकार से विशेषरूप से निवेदन करूंगा कि इस विषय पर चर्चा करें। उनकी जो किताब है, उन्होंने सबको भेजी है। आपको भी भेजी है, प्रधान मंत्री जी को भेजी है और नेता विरोधी दल को भी भेजी है। मैं आपसे निवेदन करूंगा इस पर चर्चा होनी चाहिए, क्योंकि देश धीरे-धीरे ऐसे जाल में फंस रहा है, जहां केवल विदेशी सहायता के ऊपर १०० करोड़ के देश को चलाना सम्भव नहीं। वह आत्मनिर्भरता की बात, वह पुरूषार्थ की बात, वह संयम की बात अब नहीं रही। इससे उनका दुखी होना स्वाभाविक है। उन्होंने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया है। उन्होंने देश के निर्माण में काम किया है। ऐसे व्यक्ति को अगर ऐसा निर्णय लेना पड़े तो हमारे लिए दुख की बात है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कहूंगा कि आप संसदीय कार्य मंत्री से निवेदन करें, मैं उनसे भी आपके जरिए निवेदन करता हूं कि वे प्रधान मंत्री जी से कहें और नेता विरोधी दल, दूसरे दलों के नेताओं और सोमनाथ जी सब मिलकर कम से कम उनकी बात सुनें, उस पर विचार करें और देखें कि उसको करना कितना सम्भव है। बजट बनाने में हमारे वित्त मंत्री जी को कठिनाई होगी। इससे उनको भी सहायता मिलेगी, मैं ऐसा समझता हूं। कठोर कदम उठाने की बात करना आसान है, साधारण कदम को उठाने की कोशिश करें तो देश कुछ आगे बढ़ सकता है।

">

श्री प्रमोद महाजन: अध्यक्ष जी, चन्द्रशेखर जी ने बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया है। वसंत साठे जी की चिट्ठी हममें से बहुत सारे लोगों को मिली है, मुझे भी मिली है। मैं जरूर प्रधान मंत्री जी का ध्यान इसकी ओर आकर्षित करूंगा। इतना ही नहीं, वित्त मंत्री जी अपना बजट बनाने के पहले वसंत साठे जी से कम से कम व्यक्तिगतरूप से इन बातों की चर्चा कर लें, यह काम मैं वित्त मंत्री जी की ओर से भी करा दूंगा। जहां तक यहां चर्चा का सवाल है, अगले सत्र में अगर किसी नियम के अंतर्गत संसद में चर्चा होगी तो सरकार उसका स्वागत करेगी।